# श्रीपिल्लई लोकाचार्य का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व

**भावना शुक्ला***

विशिष्टाद्वैतवेदान्त की परम्परा में रामानुजाचार्य के बाद श्रीपिल्लई लोकाचार्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्रीलोकाचार्य न केवल उद्भट दार्शनिक थे अपितु भाष्यकार रामानुजाचार्य के आचार्य परम्परा के संवाहक भी थे। वस्तुतः रामानुजाचार्य के पश्चात् विशिष्टाद्वैतवेदान्त की मन्दाकिनी दो रूपों में प्रवाहित हो गई।[1] उनमें से एक का प्रतिनिधित्व श्रीपिल्लै लोकाचार्य ने किया, तथा इनके द्वारा प्रवर्तित मत टैंकले के नाम से विश्रुत हुआ तथा दूसरे मत का प्रतिनिधित्व आचार्य वेंकटनाथ, जिन्हें परवर्ती आचार्य वेदान्तदेशिक(1269ई0–1369ई0), वेदान्ताचार्य तथा कवि सिंह तार्किक भी कहते हैं[2], इनके द्वारा प्रवर्तित मत बड़गलै के नाम से जाना जाता है।[3] श्रीपिल्लई लोकाचार्य का अपने समकालीन आचार्य वेंकटनाथ से प्रपत्ति के अर्थबोध के विषय में मतभेद था। यही कारण था कि विशिष्टाद्वैतवेदान्त में दो पृथक् मत टैंकले तथा बड़गले स्थापित हुए तथा आजकल लोकभाषा पर अधिक पक्षपात होने के कारण दक्षिण भारत में टैंकले मत पर विशेष आग्रह दृष्टिगोचर हो रहा है।[4]

**जीवनवृत्त**–अल्ग अरिया (अथवा लोकाचार्य) यह नाम सर्वप्रथम श्रीनामपिल्लई (श्रीकलिवैरिगुरु) के साथ तब जुड़ा, जब श्री कन्थादाई शोन हापर ने उनका अभिवादन 'विश्व के आचार्य' के रूप में किया। श्रीनामपिल्लई के ही अत्यन्त आज्ञाकारी एवं स्नेहपात्रशिष्य श्री वड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई हुए, जिन्होंने अपने गुरु के प्रति अपार श्रद्धा होने के कारण अपने प्रथम पुत्र का नाम श्रीपिल्लई लोकाचार्य रखा। लोकाचार्य के साथ जुड़ा 'पिल्लई' पद उन्हें श्रीनामपिल्लई द्वारा प्रदत्त उपाधि है।

श्रीपिल्लई लोकाचार्य का जन्म ईसवी सन् 1205 को श्रीरप्रम् में हुआ था। इनका सम्बन्ध उस परिवार से था, जो अपनी विद्वत्ता एवं धर्मानुराग के लिए विश्रुत था। उनके पिता श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई (श्रीकृष्णपाद सूरि) थे, जो श्रीनामपिल्लई के प्रिय शिष्य थे। एकबार जब श्रीनामपिल्लई ने अपने परमप्रिय शिष्य श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई की माता 'अम्मी' से उनका कुशलक्षेम पूछा। तब उनकी माता ने बड़े ही उदास मन से अपनी व्यथा बताई, कि उनका पुत्र अपनी पत्नी से अलग रहता है, जिसके कारण उनके कोई सन्तान नहीं है अतः उनकी चिन्ता का सबसे बड़ा कारण है, उनके वंश का आगे न बढ़ पाना। यदि इसी प्रकार उनका पुत्र गृहस्थ धर्म से विरक्त रहेगा तो उनके वंश की वृद्धि तो कथमपि नहीं हो पायेगी। उनके कष्ट को जानकार श्रीनामपिल्लई ने श्रीवड़क्कूथिरूविथिप पिल्लई की माता को यह आदेश दिया कि वह अपनी पुत्रवधु (श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई की पत्नी) के साथ उनके समक्ष उपस्थित हो जाए। इसके पश्चात् जब श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई की पत्नी आचार्य के समक्ष उपस्थित हुई तो उन्होंने उसे यह आशीर्वाद दिया कि वह शीघ्र ही उन्हीं के समान पुत्र की माँ बनने का गौरव प्राप्त करेगी। तदनन्तर श्रीनामपिल्लई (श्रीकलिवेरिगुरु) ने अपने शिष्य श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई को बुलाया तथा उन्हें यह निर्देश दिया कि वह निष्ठापूर्वक गृहस्थ धर्म का पालन करें। ऐसा करने से उनके वैराग्य में कोई भी विघ्न उत्पन्न नहीं होगा। श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई ने अपने गुरु के निर्देशानुसार गृहस्थ धर्म का पालन किया। शीघ्र ही श्रीनामपिल्लई के आशीर्वाद से उनकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया[5] तथा उनका नाम ''पिल्लई लोकाचार्य'' रखा। उसी बालक के अपथापूर्ति के दिन जब श्रीनामपिल्लई श्रीपिल्लईलोकाचार्य के साथ भगवान् रंगनाथ की पूजा कर रहे थे, तो भगवान् रंगनाथ ने श्रीनामपिल्लई को यह आदेश दिया कि वह श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई को स्वयं भगवान् की ही तरह एक और पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दें। तदनन्तर श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई को अपने दूसरे पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम भगवान् रंगनाथ के नाम पर अजाहागिया मणवालम पेरूमल नायनार रखा।

**शिक्षा**–श्रीपिल्लई लोकाचार्य तथा उनके भाई अजाहागिया मणवालम पेरूमल नायनार दोनों ही भाई आचार्य श्रीनामपिल्लई तथा पिता श्रीवड़क्कू थिरूविथिप पिल्लई की छत्र छाया में पले बढ़े और उनसे शिक्षा प्राप्त की।

**महानता**–श्रीवचनभूषण नामक ग्रन्थ के व्याख्यान की प्रस्तावना में उनके विषय में एक घटना बतायी गयी है, जो इस प्रकार से है कि श्रीमणर्पाक्क नाम ग्राम में नम्बियार नामक कोई श्रीवैष्णव रहते थे। कांचीपुरम् के श्रीवरदराज ने उनके ऊपर विशेषरूप से कृपा की और वे स्वाभाविकी दया से प्रेरित होकर उन श्रीवैष्णव को स्वप्न में उपायरूप से कुछ अर्थों का स्वयम् उपदेश दिए और उन्हें स्वप्न में ही आदेश दिए कि तुम यहाँ से जाकर उभयकावेरी के बीच में स्थित श्रीरप्रम् में निवास करो। इसके बाद इससे भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहस्यों के अर्थों का मैं तुम्हें उपदेश दूँगा। श्रीभगवान् के उस आदेश को सुनकर वे श्रीवैष्णव भी श्रीरंगम् में आकर भगवान् रंगनाथ की सेवा करते हुए पहले श्रीभगवान् के उपदिष्ट अर्थों का अत्यन्त रहस्यरूप से अनुसन्धान करते हुए, एकान्त में किसी देव मन्दिर में निवास करते थे। उस समय एक दिन अपने कुछ अत्यन्त ज्ञानी अन्तरंग शिष्यों के साथ उसी मन्दिर में श्रीपिल्लई लोकाचार्य स्वामी जी भी आये। उस दिन उनका वहाँ आना यादृच्छिक (संयोगवशात्) था। उन्होंने देखा कि वह स्थान एकान्त में है, अतएव वहीं बैठकर वे अपने शिष्यों को रहस्यार्थ का उपदेश करने लगे।[6] श्रीलोकाचार्य स्वामी के द्वारा उपदेश दिए जाते हुए उन अर्थों को जब नम्बियार ने सुना तो उन्होंने अनुभव किया कि ये तो वे ही अर्थ हैं, जिन अर्थों का श्रीभगवान् ने हमें स्वप्न में उपदेश दिया था।

**शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।**

उन अर्थों को सुनकर वे श्रीवैष्णव नम्बियार अत्यन्त प्रसन्न हुए। इसके बाद वह बाहर निकलें और श्रीपिल्लई लोकाचार्य के पास आए। उन्होंने श्रीलोकाचार्य को साष्टाङ्ग प्रणाम किया। और उनसे पूछा कि क्या आप वही हैं? यह सुनकर श्रीपिल्लई लोकाचार्य स्वामी जी ने पूछा कि क्या बात है? आप किसके विषय में जिज्ञासा कर रहे हैं? इस तरह से श्रीपिल्लईलोकाचार्य स्वामी जी द्वारा पूछे जाने पर श्री नम्बियार ने बताया कि उन अर्थों का श्री वरदराज भगवान् ने किस प्रकार से उन्हें स्वप्न में उपदेश दिया था, फिर श्रीभगवान् ने श्रीरंगम् में जाकर निवास करने का आदेश दिया और किस प्रकार से उन्हें श्रीभगवान् ने बतलाया कि वहाँ पर मैं तुम्हें इससे भी अधिक विस्तार से उपदेश दूँगा।[7]

उन श्रीवैष्णव की बातों को सुनकर श्रीपिल्लई लोकाचार्य स्वामी ने प्रसन्न होकर उन श्रीवैष्णव को अपना लिया। वे नम्बियार भी श्रीपिल्लई लोकाचार्य स्वामी जी के अत्यन्त अन्तरंग शिष्य बनकर उनके साथ रहने लगे।[8]

उसी समय वहाँ पर श्रीभगवान् रंगनाथ उन श्रीनम्बियार को स्वप्न में आकर आदेश दिया कि आप श्रीपिल्लई लोकाचार्य स्वामी से कहें कि यह श्रीरंगनाथ भगवान् का आदेश है कि ये अर्थ कही विस्मृत न हो जाए अतएव वे इन अर्थों का प्रबन्धन (ग्रन्थ) के रूप में करें। तथा श्रीनम्बियार ने श्रीभगवान् श्रीरंगनाथ जी के आदेशानुसार उसको श्रीपिल्लई लोकाचार्य स्वामी जी से कहा। तब श्रीभगवान् रंगनाथ जी के आदेश को सुनकर श्रीलोकाचार्य ने विचार किया कि यदि ऐसी बात है तो मैं वैसा ही करूँगा यह सोचकर उन्होंने श्रीवचनभूषण नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। श्रीवचनभूषण की गणना श्रीलोकाचार्य के श्रेष्ठतम ग्रन्थों में की जाती है।[9]

**शिष्य**—श्रीपिल्लई लोकाचार्य के मुख्य शिष्यों में श्री अजाहगिया मणवालम पेरूमल नायनार, कुरकुलोत्तमदास, श्रीमणर्पाक्क नाम्बियार, कोल्लिकवलदसर (अजाहगिरा मनावला पेरूमल पिल्लई), कोट्टूरिल्नार और विलन्जसोलई पिल्लई थे।

पिल्लई लोकाचार्य के समय में मुसलमानों ने श्रीरंगम् पर आक्रमण किया। इनके समय में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर ने दक्षिण पर ईसवीं संवत् 1310 में आक्रमण किया। उसने वारंगल और द्वार समुद्र को सरलता से जीत लिया और दक्षिण सीमान्त तक बढ़ गया और लूटमार और तबाही मचा दी। मुसलमानों ने श्रीरंगम् पर आक्रमण किया। मुस्लिमों ने शहर और मन्दिर को लूट लिया। अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर के आक्रमण में वे आक्रान्ताओं की क्रूरता के शिकार हुए थे। उस समय पिल्लई लोकाचार्य ने मन्दिर और पेरिया पेरूमल को बचाने के लिए उनकी सन्निधि को ईंट और पत्थरों से ढ़क दिया। मुस्लिमों के आक्रमण के कारण आगे जाकर श्रीपिल्लई लोकाचार्य ने नाम पेरूमल (रंगनाथ) और नाचिमार के साथ श्रीरंगम् को छोड़ दिया। जब वह रंगनाथ की मूर्ति लेकर भाग रहे थे तो रास्ते में जब वे जंगल से गुजरे तो चोरों ने उन पर



आक्रमण कर दिया तथा नामपेरूमल (रंगनाथ) के सारे आभूषण और बर्तन चुरा ले गये। पिल्लई लोकाचार्य ने उन चोरों को सभी कुछ दे दिया। किन्तु उन्हें खुशी इस बात की थी कि वे चोर नामपेरूमल (रंगनाथ) की मूर्ति उन्हीं के पास छोड़ गये थे। किन्तु बाद में जब वे चोर भगवान् रंगनाथ के बर्तन और आभूषण उनके पास वापस लौटाने आए, श्री लोकाचार्य ने उनसे वह सामग्री लेने से मना कर दिया। वह पुनः आगे बढ़ने लगे। चलते—चलते वे मदुरै के पास ओत्थाकदै (व्ज्भ।झ।क।प्) के ज्योतिष्कुण्ड नामक कस्बे में पहुँच गए। यहाँ से ही समीप की पहाड़ी जो सम्प्रति यानामलाई (Yanamalai) के नाम से विश्रुत है, से फिसलकर गिर जाने के कारण इनकी तबितय बहुत खराब हो गयी। तथा ईसवीं संवत् 1311 को ज्येष्ठ सुदी द्वादशी को 106 वर्ष की आयु में वे परमपद को प्राप्त हो गए। आज भी लोकाचार्य की समाधि मदुरै के पास नरसिंह मन्दिर से एक किलोमीटर की दूर ओत्थाकदै नामक स्थान पर विद्यमान है।

जब श्रीलोकाचार्य इस संसार को छोड़ने वाले थे, तब उन्होंने अपने चरण कमलों से समीपस्थ विद्यमान चीटियों एवं अन्य कीड़ों मकौड़ों को छूना शुरू कर दिया, जिससे श्रीवैष्णव के द्वारा छू जाने से ये समस्त प्राणी भी वैकुण्ठ धाम तक पहुँच जाए। इससे लोकाचार्य की जीवित प्राणियों के प्रति करुणा का बोध होता है।

**कर्तृत्व**—प्रत्येक श्रीवैष्णव के जीवन का परम ध्येय नित्य आनन्द की प्राप्ति है तथा पिल्लई लोकाचार्य प्रतिपादित अष्टादश रहस्य—ग्रन्थ भी इसी ध्येय को प्राप्त कराना चाहते थे। यही कारण था कि पिल्लई लोकाचार्य ने हमें वह लिखित रहस्य ग्रन्थ प्रदान किये, जो उन्होंने पूर्व में मौखिकरूप में शिष्यों को प्रदान किये थे। वे इन शिक्षाओं को भावी पीढ़ी के कल्याणार्थ सुरक्षित रखना चाहते थे और इसे लोगों के साथ बाँटना चाहते थे। इससे उनकी हमारे प्रति चिन्ता और प्रेम का बोध होता है। श्रीमल्लोकाचार्य प्रणीत अष्टादश रहस्य ग्रन्थों अग्रलिखित हैं —[10]

1. तत्त्वत्रय
2. तत्त्वशेखर
3. तनिप्रणव
4. तनिचरमम्
5. श्रीवचनभूषण
6. श्रियःपतिप्पदि
7. प्रमेयशेखर
8. प्रपन्नपरित्राण
9. परन्नपदि
10. अर्थपंचक
11. अर्चिरादि
12. नवरत्नमाला
13. नवविधासम्बन्धम्
14. सारसंग्रह
15. संसार साम्राज्य
16. यादृच्छिकप्पदि
17. मुमुक्षुप्पदि
18. द्वयम्

इन ग्रन्थों में श्रीपिल्लई लोकाचार्य विरचित 'श्रीवचनभूषण' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ चार सौ सत्तासी सूत्रों में उपनिबद्ध है। इस ग्रन्थ में छः प्रकरण है। 'पुरुषाकारवैभवप्रकरण' इसका प्रथम प्रकरण है। इसमें श्रीदेवी को पुरुषाकारस्वरूप

बताया गया है। श्रीदेवी श्रीभगवान् की प्रियतमा है। उनके अनुग्रह के बिना कोई भी संसारी जीव श्रीभगवान् की कृपा का पात्र नहीं बन सकता। इसमें पुराणों की अपेक्षा इतिहास की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गयी है। उसमें भी श्रीरामायण को सर्वश्रेष्ठ प्रमाण बताया गया है। इसके दूसरे प्रकरण 'उपायवैभवप्रकरण' में भगवत्प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन भगवच्छरणागति बतायी गयी है। 'अधिकारीवैभवप्रकरा' यह इस ग्रन्थ का तीसरा प्रकरण है, जिसमें शरणागति के अधिकारी का स्वरूप तथा स्वभावादि का निरूपण किया गया है। इसके चतुर्थ प्रकरण 'सद्गुरुपसेवनप्रकरण' में सदाचारी के स्वरूप का निरूपण किया गया है। इसका पाँचवा प्रकरण 'भगवर्न्निहेतुक कृपाप्रकरण' है। 'आचार्योपायप्रकरण' इसका छठा और अन्तिम प्रकरण है। इसमें आचार्याभिमान को ही परमात्म प्राप्ति का साधन बताया गया है।[11] श्रीवचनभूषण में आचार्यों के कहावतों का संग्रह है, जिसमें ईश्वर की प्रकृति, भक्ति एवं प्रपत्ति का वर्णन प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त 'तत्त्वत्रय' श्रीनिवासमत का उपयोगी संग्रह ग्रन्थ है, जिसमें चित्, अचित् तथा ईश्वर के स्वरूप और उनके आपसी सम्बन्ध का निरूपण किया गया तथा चित्, अचित् और ईश्वर के ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति बतायी गई है। इस पर वरवर मुनि की सुन्दर टीका भी है।[12]

तत्त्वशेखर चार अध्यायों में उपनिबद्ध है। इसके प्रथम अध्याय में नारायण ही सर्वश्रेष्ठ देवता और परम कारण के रूप में प्रतिपादित किए गए हैं। इस मत के समर्थन में शास्त्र के उद्धरण दिए गए है। दूसरे अध्याय में जीव के स्वरूप का वर्णन शास्त्रों के आधार पर किया गया है। तृतीय अध्याय में भी इसी विषय का प्रतिपादन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में उन्होंने बताया कि प्रपत्ति अर्थात् ईश्वरशरणागति ही समस्त जीवों का अन्तिम लक्ष्य है।[13]

मुमुक्षुप्पदि नामक ग्रन्थ में विशिष्टाद्वैतवेदान्त के तीन प्रमुख रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, ये है–

**ऊँ नमो नारायणाय, दिव्यमन्त्रम् और चरमश्लोकम्।[14]**

प्रत्येक श्रीवैष्णव के जीवन का परम ध्येय नित्यानन्द की प्राप्ति है, तथा श्रीपिल्लई लोकाचार्य ने भी अष्टादश रहस्य ग्रन्थों का प्रतिपादन भी इसी ध्येय की प्राप्ति हेतु किया था। यही कारण था कि पिल्लई लोकाचार्य ने हमें वे लिखित रहस्य ग्रन्थ प्रदन किये, जो उन्होंने पूर्व में मौखिक रूप से अपने शिष्यों को प्रदान किए थे। वे इन शिक्षाओं को भावी पीढ़ी के कल्याणार्थ सुरक्षित रखना चाहते थे और इसे लोगों के साथ बाँटना चाहते थे। इससे हमारे प्रति उनकी चिन्ता एवं स्नेह का बोध होता है। अतः हमारा यह कर्त्तव्य है, कि जो कुछ भी उन्होंने इन रहस्य ग्रन्थों के माध्यम से बताने की कोशिश की है, हम सबको अपने जीवन में उसका अनुसरण करना चाहिए। लोकाचार्य के अष्टादश रहस्य ग्रन्थों में मुमुक्षुप्पदि, तत्त्वत्रयम् और श्रीवचनभूषणम् विशेष उल्लेखनीय है, क्योंकि वे अल्प शब्दों में ही अद्वैत एवं द्वैतप्रबन्धम् का सार लिए हुए हैं, जो लोगों के द्वारा सरलता से आत्मसात



किए जाने योग्य हैं तथा जो प्रमाणों द्वारा सर्वथा युक्ति संगत भी हैं।

श्रीपिल्लई लोकाचार्य ने यह समस्त कार्य मणीप्रवालम् शैली अर्थात् संस्कृत तथा तमिल मिश्रित भाषा में किया गया है।[15] अपने ग्रन्थों में श्रीपिल्लई लोकाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद के उन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, जो न सिर्फ शिक्षित वर्ग अपितु अल्प–शिक्षित वर्ग के भी काम आ सकें। अतः उनका लोकभाषा के प्रति विशेष आग्रह दिखाई पड़ता है ताकि वह अपने विचारों को जनसाधारण तक भी पहुँचा सकें। यही कारण है कि श्रीलोकाचार्य के बड़ी संख्या में शिष्य बने। उन्होंने शूद्र स्त्री एवं पुरुष सभी समानरूप से स्थान दिया। अतः समाज के प्रत्येक वर्ग से बड़ी भारी संख्या में आकर लोक उनका शिष्यत्व ग्रहण करने लगें। श्रीपिल्लई लोकाचार्य यावज्जीवन ब्रह्मचारी रहें तथा उन्होंने अपना अधिकांश समय श्रीरंगम में ही व्यतीत किया।

**संदर्भ ग्रंथ सूची–**


1. आचार्य बलदेव उपाध्याय, वैष्णव सम्प्रदायों का साहित्य और सिद्धान्त, पृ0 158, चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. डा0 एस0एन0 दास गुप्त विरचित, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–3, पृ0 97, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. आचार्य बलदेव उपाध्याय, वैष्णव सम्प्रदायों का साहित्य और सिद्धान्त, पृ0 159, चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. आचार्य बलदेव उपाध्याय, वैष्णव सम्प्रदायों का साहित्य और सिद्धान्त, पृ0 159, चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी।
5. श्रीवचनभूषण, प्रस्तावना भाग, पृ0 3
6. श्रीमल्लोकाचार्य विरचित श्रीवचनभूषण, भूमिका भाग, पृ0 14, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
7. श्रीमल्लोकाचार्य विरचित श्रीवचनभूषण, भूमिका भाग, पृ0 14, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
8. श्रीमल्लोकाचार्य विरचित श्रीवचनभूषण, भूमिका भाग, पृ0 15, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
9. श्रीमल्लोकाचार्य विरचित श्रीवचनभूषण, भूमिका भाग, पृ0 20, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
10. डॉ0 एस0एन0 दास गुप्त, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–3, पृ0 110
11. श्रीमल्लोकाचार्य विरचित श्रीवचनभूषण, भूमिका भाग, पृ0 20, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
12. डॉ0 एस0एन0 दास गुप्त, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–3, पृ0 110
13. डॉ0 एस0एन0 दास गुप्त, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–3, पृ0 110, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
14. डॉ0 एस0एन0 दास गुप्त, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–3, पृ0 111, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
15. डॉ0 एस0एन0 दास गुप्त विरचित, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–3, पृ0 110, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।